बी.एच.आई.सी.-107: भारत का इतिहास-IV (*c.*1206-1550)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-107**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -107 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास ग्रंथों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

2) सल्तनत के शासक वर्ग की संरचना पर एक निबंध लिखिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) दक्षिणी राज्यों और दिल्ली सल्तनत के बीच संबंधों का वर्णन कीजिए। 10

4) 13वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान असम में नए राज्यों के उदय पर एक टिप्पणी लिखिए। 10

5) दिल्ली सल्तनत के अधीन आंतरिक व्यापार की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) मंगोल समस्या 6

7) नायंकर व्यवस्था 6

8) दिल्ली सुल्तानों की मुद्रा व्यवस्था 6

9) जैन परंपरा 6

10) दिल्ली सल्तनत के अधीन सार्वजनिक (लोक) निर्माण कार्य 6

1. दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास ग्रंथों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (20 अंक)

उत्तर: दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.) के इतिहास को समझने के लिए समकालीन फारसी इतिहास-ग्रंथ अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दरबारी इतिहासकारों ने सुल्तानों के शासन, सैन्य अभियानों, उत्तराधिकार के संघर्षों, कुलीनों के प्रभाव तथा प्रशासनिक नीतियों का वर्णन किया। किंतु इन रचनाओं को घटनाओं का पूर्णत: निष्पक्ष विवरण नहीं माना जा सकता। इतिहासकार की दरबार से निकटता, धार्मिक दृष्टिकोण, आश्रयदाता का हित और साहित्यिक परंपरा उसके लेखन को प्रभावित करते थे। इसलिए इनके तथ्यों और पूर्वाग्रहों की एक साथ समीक्षा आवश्यक है।

आरंभिक इतिहास-ग्रंथ और उनकी उपयोगिता

हसन निजामी का 'ताज-उल-मआसिर' मुहम्मद गोरी की विजयों तथा कुतुबुद्दीन ऐबक के समय की राजनीतिक घटनाओं के अध्ययन में उपयोगी है। इसमें विजयों, शासक की उदारता और राज्य की स्थापना का उल्लेख मिलता है। इसकी अलंकारपूर्ण फारसी शैली और प्रशस्तिपरक भाषा के कारण सामान्य जनता का जीवन पीछे रह जाता है। इस ग्रंथ की घटनाओं की पुष्टि अभिलेखों तथा अन्य साक्ष्यों से करना उपयुक्त है। आरंभिक सल्तनत की राजनीतिक वैधता स्थापित करना भी इसकी रचना का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था।

मिनहाज-उस-सिराज जुजजानी का 'तबकात-ए-नासिरी' गुलाम वंश तथा उसके पहले के शासकों को समझने का प्रमुख स्रोत है। यह विभिन्न राजवंशों को अलग-अलग तबकों में प्रस्तुत करता है। इल्तुतमिश, रजिया और नासिरुद्दीन महमूद के काल की घटनाएँ तथा मंगोल दबाव इसमें दर्ज हैं। लेखक स्वयं तत्कालीन उच्च प्रशासनिक और धार्मिक वर्ग से संबंधित था; उसके वर्णन से दरबारी राजनीति तथा तुर्क अमीरों के दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। लेकिन रजिया के शासन और गैर-तुर्क समूहों के प्रति उसकी धारणाओं में सामाजिक-धार्मिक पूर्वाग्रह दिखाई देते हैं।

अमीर खुसरो और राजनीतिक काव्य

अमीर खुसरो की रचनाएँ साहित्य तथा इतिहास के बीच स्थित हैं। 'किरान-उस-सादैन', 'मिफ्ताह-उल-फुतूह', 'खजाइन-उल-फुतूह' और 'तुगलकनामा' से खलजी और आरंभिक